आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 23 | उदयपुर मंगलवार 15 दिसंबर 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

बच्चे के बोझ से भारी बस्ते का बोझ

एक काल वह था जब शिक्षा कर्ण प्रधान थी। श्रवण प्रधान थी। मौखिक, कण्ठ-दर-कण्ठ, कण्ठासीन होती हुई पीढ़ी-दर-पीढ़ी, एक पीढ़ी दूसरी आगे आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करती हुई लोकसम्मत बनी हुई थी। वह अब चक्षु प्रधान हो गई है। रटन विद्या पठन विद्या बन गई है। आज की शिक्षा से बच्चे का बचपन छीन गया है। खेलकूद बालरंजन कहीं दफन हो गया है। जीना हराम हो गया है। विश्रृंखलित जीवन की आपाधापी में बच्चा किंवा कर्त्तव्य विमूढ़, दादारंगा, बावरा बन डोलता-सा लग रहा है। वह सपने में भी बड़बड़ाने लग गया है- 'मां मैं स्कूल नहीं जाऊंगा। स्कूल से मेरी छुट्टी करा दो।' हिन्दी के बिना हिन्द की पहचान हमारे देश में ही हैप्पीनेस की टाई गले को दबा रही है।

शिक्षा व्यक्ति को आदर्श और खुशहाल जीवन जीना सिखाती है। पहले 'घोखत विद्या खोदत पानी' की शिक्षा थी। बच्चे को सब चीजें रटाई जाती थीं।

'चंटी बाजै चम चम, विद्या आवै घम-घम' वाली कहावत थी। यानी विद्या माथे में तब ही चढ़ती है जब बच्चे के सामने गुरुजी की चंटी यानी छड़ी का भय हो। चंटी निरन्तर हलचल देने का एहसास देती है। पहले गरजी बावजी पढ़ाते थे। माना जाता था कि पिटाई हुए बिना बच्चा पढ़-लिख कर होशियार नहीं बनेगा।

सजा भी कई तरह की होती। बच्चे की कान कर पपड़ी पर कंकरी रंगड़ देने की, शरीर के विविध हिस्सों हथेली, जांघ, टांग, पीठ आदि पर डंडों की मार देने, गाल पर जोर का तमाचा मारने, टांगों पर बैठ उनके नीचे से हाथ निकाल उंगलियों से आंटीदारी कर कान पकड़ने, दण्ड लगाने, बैठकें लगाने जैसी सजा तो कॉमन थी।

गुस्सैल गुरुजी हाथ पर डाम यानी दग्ध चिन्ह तक लगा देते। बच्चे की टांगड़ी पकड़ उल्टा कर देने, झूलाने तथा सिर को जमीं पर धचकाने तक की सजा होती। पुरानों की जबान से तो यह भी सुना कि गुरुजी का पारा जब आसमान पर चढ़ जाता तो पास की कुई में कुछ समय के लिए उल्टा भी लटका दिया जाता। लेकिन अभिभावक कुछ नहीं कहते, बोलते। उनको तो यही लगता कि छोरा मार खायेगा तो ही होशियार बनेगा और सच में दो घर (कक्षा) तक की पढ़ाई कर बच्चा कमाने लायक हो जाता।

अब वह शिक्षा, वे गरजी गुरुजी, वे मारक साधक, वे रटन के मानदण्ड नहीं रहे। आजाद होने के बाद सबकुछ बदल गया। पहली ही बात तो यही हुई कि आजादी ने बच्चे को एक-एक क्लास लंघवादी। दूसरी में पढ़ने वाला सीधा चौथी में, तीसरी वाला पांचवीं में, चौथी वाला छठी में चढ़ा दिया गया। धीरे-धीरे बोझिल सजा की जगह बच्चे का पुस्तकीय बोझ बढ़ने लगा।

भारत देश तो शिक्षा के साथ-साथ संख्या का वर्धन करने वालों में भी अव्वल होता रहा और होते-होते पूरे विश्व में सर्वोच्च पायदान पर पहुंच गया है। यह कथन हमारी होशियारी और बहादुरी का जश्न नहीं है बल्कि टिड्डी दल की तरह आदमी की फसल को चौपट करने का पछतावा देने वाला प्रायश्चित स्वरूप नियंत्रण करने का, नक्कारखाने को तूती में बंद करने का संकल्पित मौन है।

एक काल वह था जब शिक्षा कर्ण प्रधान थी। श्रवण प्रधान थी। मौखिक, कण्ठ-दर-कण्ठ, कण्ठासीन होती हुई पीढ़ी-दर-पीढ़ी, एक पीढ़ी दूसरी आगे आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करती हुई लोकसम्मत बनी हुई थी वह अब चक्षु प्रधान हो गई है। रटन विद्या पठन विद्या बन गई है।

आज की शिक्षा से बच्चे का बचपन छीन गया है। खेलकूद बालरंजन कहीं दफन हो गया है। जीना हराम हो गया है। विश्रृंखलित जीवन की आपाधापी में बच्चा किंवा कर्त्तव्य विमूढ़, दादारंगा, बावरा बन डोलता-सा लग रहा है। वह सपने में भी बड़बड़ाने लग गया है- 'मां मैं स्कूल नहीं जाऊंगा। स्कूल से मेरी छुट्टी करा दो।'

स्कूल जाने के लिए सुबह बमुश्किल आंखें मलता-मलता, मन मार उसे उठना पड़ता है। जैसे-तैसे ब्रश कर, शौचादि से निवृत्त हो, नहाये- अन नहाये, गटागट गले में दूध गटकाये, फटाफट स्कूल ड्रेस पहन, हड़बड़ाहट से बस्ता लटकाये, भागमभाग बस पकड़नी होती है। स्कूल पहुंचने पर सबसे पहले इंग्लिश, फिर मैथ्स से पाला पड़ता है जो उसके लिए माथापच्ची और सिरदर्द का विषय है।

वहां से छुट्टी पर घर आता है तब वह थका-थका लगता है। जैसे तैसे बस्ता पटका, ड्रेस उतारी, खाना खाकर थोड़ा टाइम इधर-उधर देता कि ट्यूशन जाने की तैयारी करता है। वहां से लौट होमवर्क में सिर खपाता है। थोड़ा बहुत सोता-ऊंघता है फिर मम्मी-पापा की डांट डपट। स्कूल में टीचर सिस्टर का उलाहना। मोबाइल पर मैसेज ; बच्चा क्या करे, क्या छोड़े, कब क्या ग्रहण करे; लगभग-लगभग कैदी की तरह तन से और मन-मस्तिष्क से भी बंधा-जकड़ा रहता है।

इधर-उधर के तनाव और अपनों के यातनाजनित वातावरण से बच्चा तनिक भी मुक्त नहीं हो पाता है। उसका दर्द कौन समझ रहा है। इधर यह सुनने में आया कि शिक्षा नीति विषयक कस्तूरीरंगन ने जो रिपोर्ट सौंपी वह भी छह सौ पेज का पुलन्दा है और सार्वजनिक करने के बाद एक लाख सुझाव आए हैं।

जो बच्चे पढ़ रहे हैं उनसे कौन पूछ रहा है कि उसका क्या दर्द है। वह क्या कहना चाहता है। बच्चे भीतर ही भीतर घुट रहे हैं। जब कोई नहीं सुनेगा तो क्या हश्र होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे में कोटा की वह बच्ची याद आ रही है जिसने आत्महत्या कर ली थी।

उसने मां को जो पत्र लिखा वह दिल दहलाने वाला है। लिखा, 'मैं नहीं चाहती थी गणित और विज्ञान पढ़ना लेकिन मुझे आपने और पापा ने अपनी झूठी प्रतिष्ठा के नाते धकेल दिया।' और सुनो तो कान खोल दो, सन् 17 के दौरान इन्दौर के अहिल्यादेवी इंजीनियरिंग कॉलेज के शुभम नामक छात्र ने अंग्रेजी माध्यम में न पढ़ने के कारण और उससे 4 वर्ष पूर्व दिल्ली के एम्स में अखिल मीणा ने खुदकशी कर ली थी।

शिक्षा के बड़े ठिकानों में अंग्रेजी की लपरचपर तो नजर आती है पर भारतीय भाषाओं को कोई स्थान नहीं है। हिन्दी की मांग के लिए बच्चे धरने पर बैठे मगर किसी के कान में तूती की आवाज नहीं टकराई।

हिन्दी के बिना हिन्द की पहचान हमारे देश में ही हैप्पीनेस की टाई गले को दबा रही है। जिस देश ने पूरे विश्व में सभ्यता का जागरण कर ज्ञान का प्रकाश फैलाया था। बकौल महाकवि जयशंकर 'प्रसाद' के- 'जगे हम, लगे जगाने देश, विश्व में फैला फिर आलोक...अखिल संस्कृति हो उठी अशोक।' अब वही विश्व उल्टा हमें सीखा रहा है। सीखो नीदरलैंड, नार्वे, यूरोप, चीन, जापान, इजराइल, अमेरिका से और याद करो अपने ही देश में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने पाठशाला को जेलशाला कहा था। छोड़ो दीया तले का अंधेरा और आंखों ऊपर बंधी पट्टी।

- म. भा.

अजूबा जूता

सन् 2001 में इटली के पास्क्वेल ट्रैमोनटाना ने एक चमड़े का जूता बनाया जिसका आकार 4.16 x 2.7 मीटर है और यह 80 सेंटीमीटर चौड़ा है। इसे बनाने में 11,416 डॉलर यानी लगभग 57 लाख 8 हजार रूपये का खर्च आया। इस जूते का वजन 280 किलोग्राम है तथा इसके निर्माण में 40 खालें इस्तेमाल की गई थीं। इसी प्रकार सबसे बड़ा कैनवस स्पोर्ट्स जूते का आकार 3.9 x 1.5 x 1.2 मीटर है। इसे कनाडा निवासी मिशैल नैगी ने टोरंटो में जुवेनाइल डायबिटीज रिसर्च फाउण्डेशन तथा शॉपर्स ड्रग मार्ट के सहयोग से 16 सितम्बर 2001 को तैयार किया था। यह जूता कैनवस का बना था जिसकी सूती धागे से सिलाई की गई थी। इसके तसमे के छेदों के इर्दगिर्द एल्युमिनियम लगा था और सील रबड़ का था। इस जूते के तसमे की लम्बाई 15.2 मीटर थी।

- पंजाब केसरी, 31 दिसंबर 2008 से साभार

उपन्यास अंश

-भगवान अटलानी-

लगभग डेढ सौ कार्यक्रम चन्दन जी ने कार्यकारिणी की बैठक में स्वीकृत कराये थे। उनके सम्पादन के लिये समितियों, समितियों के संयोजकों व उपसंयोजकों के साथ मुख्य संयोजक के नामों पर विचार करने के लिये उन्होंने प्रोफ़ेसर सदस्या के निवास पर एक बैठक रखी।

उसमें अजमेर के दूसरे सदस्य को भी आमन्त्रित किया जो नगर निगम में सत्ताधारी दल के चुने हुए पार्षद थे। प्रदेश के ऐसे लोगों से उनका परिचय नगण्य था जिन्हें समितियों से जोड़ा जा सकता था। मगर राजनीतिक व आर्थिक सन्दर्भों में उनकी उपादेयता असंदिग्ध थी। प्रस्तावित कार्यक्रमों में कुछ ऐसे भी शामिल थे जिनके लिये आर्थिक संसाधन जुटाने आवश्यक थे।

सैद्धान्तिक दृष्टि से सदैव केवल वित्त समिति का गठन किया जाता था। वित्तीय अनुमतियां, बजट आवंटन और व्यय का ब्यौरा इसी समिति को तैयार करना होता था। इस बार वित्त समिति को सरकार से प्राप्त राशि का प्रबन्धन नहीं करना था। अधिकरण की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये धन जुटाना था। पार्षद की व्यावहारिक उपयोगिता इसी सन्दर्भ में थी।

चन्दन जी की वरीयता में था, अधिक से अधिक सदस्यों व हितैषियों को विश्वास में लेकर, उनसे परामर्श करके निर्णय लेना। समितियों के गठन की रूपरेखा तैयार करते समय भले ही उनकी उपादेयता अधिक न हो लेकिन निर्णय में भागीदारी के कारण विशिष्टता का अहसास तो पार्षद सदस्य को होगा ही। भले ही राजनीति से जुड़े अपने कुछ नज़दीक के लोगों को वे समितियों का सदस्य बनवाना चाहें। उनके सुझाये हुए नामों को शामिल करके सहभागिता के विश्वास को बल ही मिलेगा।

चन्दन जी, पार्षद, प्रोफ़ेसर और उनके पति, चारों ने मिलकर प्रदेश के एक सौ पचास से अधिक ऐसे लोगों की सूची बनाई जिन्हें समितियों का सदस्य बनाया जा सकता था। कार्यक्रमों को प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत करके सोलह समितियों का गठन किया गया। बीस सदस्य अधिकरण की सामान्य सभा में थे। कोशिश की गई कि उन्हें संयोजक के रूप में समितियों से जोड़ा जाये।

चन्दन जी ने कुछ समितियों का गठन करते समय विशेष ध्यान रखा कि सदस्यों की विशेषज्ञताओं का पूरा लाभ मिले। वित्त समिति, प्रचार समिति, भाषा प्रशिक्षण समिति, वार्षिक पत्रिका प्रकाशन समिति और अध्यापक समिति की रचना करते समय चन्दन जी ने सोच समझ कर नामों का चयन किया।

वित्त समिति में ऐसे तीन लोग शामिल किये गये जिनके धनिकों, बड़े व्यापारियों, विदेशों में रहने वाले प्रवासियों और कारख़ानेदारों से सम्पर्क थे। प्रचार समिति में छोटे अख़बारों के सम्पादकों, स्वतन्त्र पत्रकारों और पत्र पत्रिकाओं से जुड़े, अख़बारों में कार्यरत् पत्रकारों के साथ उठने बैठने वाले, अख़बारों में समय-समय पर आलेख लिखने वाले लोगों को शामिल किया।

कुछ समाचारपत्रों के संस्करण प्रदेश के अनेक स्थानों से प्रकाशित होते थे। जहां कार्यक्रम हुआ, वहां से प्रकाशित संस्करण में समाचार छप गया। सम्बन्धित संस्करण के पत्रकारों से परिचय के कारण अधिक से अधिक इतना हुआ कि समाचार छूटा नहीं, प्रकाशित हो गया। यदि कार्यक्रम प्रदेश स्तरीय है तब भी अन्य संस्करणों में छपने की सम्भावनायें धूमिल होतीं थीं।

चन्दन जी की योजनानुसार प्रचार समिति का एक सहसंयोजक और एक सदस्य प्रत्येक ऐसे स्थान से चयनित किया जाना था जहां से किसी न किसी प्रमुख समाचारपत्र का संस्करण प्रकाशित होता था। प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम का समाचार और फ़ोटो ई मेल से सभी सहसंयोजकों के पास जायेगा। सहसंयोजक अपने नाम से पुन: तैयार करके शहर के सभी समाचार पत्रों में कार्यक्रम की ख़बर और फ़ोटो भेज देंगे। अमुक संस्करण में पहले छप गया है, यह बात कहने का अवसर किसी अख़बार को नहीं मिलेगा। सहसंयोजक अपना नाम सम्बन्धित स्थान के प्रचार प्रभारी के रूप में लिखेंगे। आवश्यक संशोधन करके ई मेल अग्रेषित किया जायेगा इसलिये किसी को मशक्कत नहीं करनी पड़ेगी। सम्पर्कों के कारण फ़ोन करके ई मेल से भेजी गई ख़बर देखने का अनुरोध करना संभव हो सकेगा।

कार्यभार ग्रहण करने के बाद एक वरिष्ठ व प्रतिष्ठित समाचारपत्र में कार्यरत् पत्रकार के साथ चन्दन जी राज्य सरकार के जनसम्पर्क विभाग के निदेशक से मिलने गये थे। उन्हें विस्मयपूर्ण प्रसन्नता हुई जब निदेशक ने नाम से सम्बोधित करके चन्दन जी का स्वागत किया। साथ गये पत्रकार की ओर देखते हुए उन्होंने हंसकर कहा, 'लगता है, आने से पहले ही आपको मेरे बारे में बता दिया गया है।'

'आप अपने आप को बहुत कम आंक रहे हैं, चन्दन जी! पता नहीं कब से मैं आपकी रचनायें पढ़ रहा हूं।'

'मिल तो पहली बार रहे हैं न?'

'हां, आमने सामने पहली बार मिल रहे हैं। मगर जब आपको अकादमी पुरस्कार मिला, मैं सभागार में दर्शकों में बैठा था।'

'बहुत खूब! फिर तो जिस उद्देश्य से मैं आपके पास आया हूं उसकी सफलता असंदिग्ध है।'

'आप बतायें। हमसे जो बन पड़ेगा, ज़रूर करेंगे।'

'आपको जानकारी है कि राज्य सरकार ने मुझे भाषा अधिकरण का अध्यक्ष नियुक्त किया है।'

'जी।'

'अधिकरण के कार्यक्रमों के प्रचार की दृष्टि से मैं आपसे सहयोग मांगने आया हूं।'

'ज़रूर करेंगे। भाषा अधिकरण को जनसम्पर्क विभाग से सहयोग लेने का अधिकार है। आप बारात निकालिये। ढोल हम बजायेंगे।'

'प्रमुख स्थानों पर अधिकरण के प्रचार प्रभारी बनाने की हमारी योजना है। यदि सम्भव है तो ज़िलों के जनसम्पर्क अधिकारियों को फ़ोन कराके निर्देश दें कि हमारे प्रचार प्रभारियों को सहयोग दें।'

'हो जायेगा। आप अधिकरण के प्रचार प्रभारियों से कहें कि वे अपने स्थान के जनसम्पर्क अधिकारियों से मिलें।'

विदा लेते समय चन्दन जी ने निदेशक से आग्रह किया कि वे अधिकरण के सिर पर कृपा हस्त बनाये रखें। जवाब में निदेशक ने संयुक्त निदेशक और समाचार उप निदेशक को अपने कक्ष में आने के लिये कहा और बोले, 'जानते हैं, मैंने इन दो अधिकारियों को क्यों बुलाया है?'

'आप बतायें।'

'सरकार निदेशक का कब तबादला कर दे, कहा नहीं जा सकता। ये दोनों सेवानिवृत्ति तक यहीं रहेंगे। सच कहूं तो विभाग यही लोग चलाते हैं। नाम का मैं मुखिया ज़रूर हूं।'

चन्दन जी आश्वस्त थे कि प्रचार समिति के सदस्य अपनी योग्यता और जनसम्पर्क विभाग के सहयोग के कारण अधिकरण के कार्यक्रमों को प्रदेश के जन-जन तक पहुंचाने में सफल होंगे। उनका मानना था कि गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम हुए, बड़ी संख्या में कार्यक्रम हुए मगर सामान्य व्यक्ति तक जानकारी नहीं पहुंची तो जंगल में मोर नाचा, किसने देखा वाली कहावत चरितार्थ होती है। अधिकरण से जुड़े सौ-दो सौ लोगों तक कार्यक्रम पहुंचे, यह पर्याप्त नहीं है। गतिविधियों की जानकारी सम्पूर्ण प्रदेश को मिलनी चाहिये। सच है कि समाचारपत्र में प्रकाशित हर एक ख़बर को प्रत्येक पाठक नहीं पढ़ता है।

वही ख़बर पढ़ी जाती है, जिसमें पढ़ने वाले की रुचि होती है। मगर यह भी सच है कि भाषा और साहित्य में दिलचस्पी रखने वाले सब लोग अधिकरण की गतिविधियों को पढ़ेंगे। ये प्रयास चन्दन जी इसीलिये कर रहे थे। प्रचार की इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से उनका यश भले ही फैले किन्तु भाषा अधिकरण की गतिविधियों के रूप में सक्रियता का संदेश प्रत्येक इच्छुक व्यक्ति तक जायेगा।

(शीघ्र प्रकाश्य उपन्यास 'कामनाओं का कुहासा' का अंश)

प्राचीन शिक्षा परम्परा

-प्रमोद कुमार-

प्राचीन भारत में तीन तरह की शिक्षा प्रचलित थी- (क) साहित्य एवं शास्त्रीय शिक्षा (ख) तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा (ग) व्यावहारिक शिक्षा। साहित्य एवं शास्त्र आदि के अध्ययन के लिए जहां बालकों के लिए गुरुकुल आदि की व्यवस्था थी वहीं बालिकाओं के लिए इस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था घर पर ही कर दी जाती थी। विद्यारंभ संस्कार सम्पन्न करने के उपरान्त इस प्रकार की शिक्षा का प्रारम्भ गांव के गुरुकुलों में ही हो जाता था। इस तरह का एक अथवा एकाधिक गुरुकुल प्रत्येक गांव में होता था।

इस शिक्षा का आधार शिक्षक होता था जिसे आचार्य, गुरु या उपाध्याय कहा जाता था। अध्यापक, अध्येता के सम्बन्ध में ऋग्वेद में दो मेढ़कों के सम्बन्ध के समान बताया गया है जो शिक्षा के वाचिक होने का संकेत है। अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार एक मेंढ़क की आवाज सुनकर दूसरा मेंढ़क टर्राने लगता है उसी प्रकार गुरु के कथन को छात्र उसके पीछे-पीछे दोहराता है। कबीर ने तो गुरु को भगवान से अधिक महत्त्व दिया है। मनु के अनुसार जनक और गुरु दोनों पिता हैं मगर वह पिता जो ज्ञान देता है, जनक से बड़ा है।

इन गुरुकुलों में मुख्य रूप से वेद, शास्त्र, ज्योतिष, धर्म, कानून या दण्ड नीति, नक्षत्र विज्ञान या खगोल शास्त्र, तत्व मीमांसा या दर्शन, नीति शास्त्र, गणित, आयुर्वेद या चिकित्सा शास्त्र और काव्य आदि की शिक्षा दी जाती थी।

शिक्षा देने का यह वाचिक या मौखिक साधन सबसे सस्ता तो था ही सर्वोच्च भी माना जाता था। नारद ने कहा- 'जो छात्र गुरु के स्थान पर पुस्तक के आधार पर ज्ञान प्राप्त करता है, वह सभा में शोभा नहीं पाता।' याज्ञवल्क्य ने भी पुस्तक को ज्ञान प्राप्ति में बाधक माना है। वाचिक परम्परा द्वारा शिक्षा का अभिप्राय मंत्रों या सूत्रों को कंठस्थ कर लेना मात्र नहीं था वरन् उनको समझना भी था।

भारतीय परम्परा के अनुसार ये गुरु प्रायः एक स्थान पर रहकर ही विद्या दान करते थे पर यदाकदा कुछ गुरु एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे। उच्चशिक्षा की प्राप्ति के लिए अथवा किसी विद्या विशेष का अध्ययन करने के लिए अध्येता को अपने गांव से दूर के किसी गुरुकुल में अथवा नालन्दा, तक्षशिला, वलभी, विक्रमशिला या बनारस जैसे स्थलों से सर्वप्रसिद्ध गुरुकुलों की यात्रा करनी पड़ती थी। ज्ञान की चाह में भटकने वाले इन ज्ञान-पिपासुओं को 'तीर्थकाक' की संज्ञा दी जाती थी।

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि तकनीकी ज्ञान होते हुए भी युद्धकला, मल्लयुद्ध, कुश्ती या इनसे सम्बद्ध विषयों की शिक्षा भी इसी तरह के गुरुकुलों, अखाड़ों या बगीचियों में दी जाती थी। इनमें युद्धकला आदि से सम्बद्ध विषयों की शास्त्रीय जानकारी वाचिक परम्परा से ही दी जाती थी। कसरत करना, दाव लगाना और अस्त्र-शस्त्र संचालन भी सिखाया जाता था।

तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा एक प्रकार से पारिवारिक और पेशे से जुड़ी थी। इस तरह की शिक्षा का प्रारम्भ प्रायः बचपन से ही हो जाता था। युवावस्था तक पहुंचते-पहुंचते छात्र अपने व्यवसाय, पेशे या तकनीकी में पूर्णरूपेण दक्ष हो जाता। इस शिक्षा के अन्तर्गत कुम्हार-कर्म, बढ़ईगिरी, लुहार-कर्म, सुनार-कर्म से लेकर वस्त्र उद्योग, तालाब निर्माण, पोत निर्माण, धातु-कर्म जैसे विषय शामिल थे। इस प्रकार के अध्ययन में इन विषयों से सम्बद्ध अनेक उपविषय भी समाहित होते थे।

व्यावहारिक शिक्षा प्रत्येक बच्चे को अपने परिवार और समाज की चौपालों पर आसपास के बुजुर्गों से मिलती थी जो वाचिक परम्परा के वाहक के रूप में कहावत आदि सुना-सुना कर व रटवा कर दी जाती। अंग्रेज शासकों ने प्राचीन भारतीय शिक्षा की परम्परा, जिसमें शिक्षा मौखिक रूप में दी जाती थी, को अनुचित मानकर उसका उपहास उड़ाया और उसमें आमूलचूल परिवर्तन करके उसे लिखित और अपने लाभ के लिए शुल्क देकर प्राप्य बना दिया।

प्राचीन समय में भारतीय जन आधुनिक मान्यताओं के आधार पर निरक्षर-अनपढ़ अवश्य होते थे पर वे अज्ञानी या ज्ञान शून्य नहीं होते थे। वे अपने हस्ताक्षर करना ही नहीं जानते थे पर उनको हिसाब-किताब आदि की दृष्टि से ठग पाना असंभव होता। ज्ञान की मौखिक परम्परा के कारण वे गणित की जमा-गुणा की प्रक्रियाओं से परिचित होते थे।

स्मृतियों के शिखर (113) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रस-गुड़ की मिठास ही नहीं, चरखी की महक भी कम नहीं थी मोतीबा की

बचपन की यादें कई रूपों में जीवन को धन्य किए रहती हैं। वे यादें उस समय तो आई-गई हो जाती हैं पर जीवन के आखिरी दौर में न जाने क्योंकर और कैसे पुनर्जीवन पाती हुईं अनेक अर्थों की रंगीनियां बन सुखद सरस अनुभूति लिए खासा मनरंजन किए रहती हैं। ऐसी ही यादें मुझे इन दिनों अपने गामड़े की आ रही हैं। गामड़ा अत्यन्त लघु आबादी लिए जनजीवन की पहुंच से दूर सुविधाहीन लोगों का बसावट-स्थल होता है।

ऐसे आसपास और भी गामड़े होते। इन सबसे जुड़ा एक बड़ा गांव होता। ऐसा ही मेरा गांव था जिससे दो कोस की दूरी पर अरनिया नामक गामड़ा था। यह मेरे बाप-दादों का गामड़ा था। मेरे दादा जीतमलजी के बाद पिताजी प्रतापमलजी ने वह गामड़ा सम्भाला।

अपने गांव में मैं आठवीं तक पढ़ा। पिताजी के समय भी कभी वहां गया होऊंगा जिसकी धुंधली सी याद है। पूरा चेहरा तो पिताजी का भी याद नहीं पड़ रहा पर उनके निधन के बाद जब मां ने वह गामड़ा सम्भाला तो मुझे देख लोग कहते जरूर सुना करता, 'यह टाबर जीत्या बा, परताब बा का दिखता है। उनके जैसा ही हू-ब-हू उणियारा (शक्ल-सूरत) लग रहा है।' यह दास्तान बहुत लम्बी और उतनी ही विषादपूर्ण उलझनभरी है, अत: यहीं छोड़ता हूं।

मां के बाद मेरे बहनोईजी जिन्हें हम जीजासा कहते, ने वह गामड़ा सम्भाला पर वे ठीक से नहीं सम्भाल पाए। उनके बाद सोवन जीजां ने वहां वणज किया तब उनके साथ मेरी भाणजी धन्ना भी जाती। उससे भी सभी परिचित हो गए।

जीजां को 97 वर्ष की उम्र में, आज भी यदाकदा भाणजी अरनिया लेकर जाती है और सबसे मिला लाती है हालांकि अब उसके समय की वहां एक-दो साथणियां ही हैं। गत सर्दियों में भी वह अपने साथ 60 कम्बलें ले गई थीं जो प्रत्येक घर में एक-एक बांट आई।

पूछने पर जीजां ने बताया कि लाला! गुड़ का बखान करूं तो करते ही जाओ, सुनते ही जाओ। तेरी चोपड़ी भरते ही जाओ। बालक के जन्मते ही जापा वाली को तीन दिन तक गुड़-अजमा खिलाया जाता है। छोरे की हंसली डिगने पर, आंसूड़े नहीं थमने पर नवाये गुड़-पानी की घुटकी दी जाती है। भोजनोपरान्त एक छोटी सी गुड़ की डली मुंह में रख दो। आसोज माह में गुड़ और माघ में घी-खिचड़ी खाना चाहिए, ऐसा बड़ेरा कहा करते थे। यूं बारह महीने क्या खाना चाहिए, क्या नहीं खाना चाहिए का विधान है।

जीजां की पोटली खुली तो बन्द होने का नाम नहीं ले रही थी। बोली, गुड़ के कई गुण हैं। इसके खाने से हड्डियां मजबूत बनती हैं। पेशाब की सारी बीमारियां इससे मिट जाती हैं। इसकी तासीर देखो कि अदरक के साथ खाने से कफ, हरड़े के साथ खाने से पित्त और सूंठ के साथ खाने से वातजनित बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। गुड़ की लपसी हर शुभ काम में बनाई जाती है। आज तो पचास तरह के पकवानों की बाढ़ आई हुई है फिर भी गणेशजी को पहला भोग तो गुड़ की लपसी का ही लगाया जाता है।

ग्यारस, पूनम, अमावस जैसी मोटी तिथियों पर ब्राह्मण महाराज को पेटिया देने की परम्परा रही है। ऐसी स्थिति में एक

बैल द्वारा गन्ने का रस निकालने की प्राचीन पद्धति

थाली में गेहूं-गजी के आटे के साथ मुट्ठी दो मुट्ठी दाल, दो पली घी, नमक की

मोटर साइकिल द्वारा गन्ने का रस निकालने की आधुनिक पद्धति - नेहा माथुर

गांगड़ी के साथ साबत मिर्चें तथा गुड़ की डली देने का रिवाज चला आ रहा है।

और सुनो, गुड़ की चाय, गुड़ की पंजीरी, गुड़ के आटे के लड्डू, गुड़ की गजक, रेवड़ियां, बताशे, पताशे, गुलगुले, पूड़े, हनुमानजी के रोट चढ़ाओ तो ऊपर गुड़ की डली, गुड़ का हलवा, गुड़ के मालपुए, गुड़-तिल, गुड़-चना खाने का तो मजा ही और था। पहले गुड़ ही गुड़ का बोलबाला था, शक्कर का तो वापर ही नहीं था तब गुड़ ही अमृत था।

किसी कारज की सिद्धि के लिए या रोग मेटण के लिए देवता के नाम मनौती लेने पर किसी एक वस्तु का त्याग करना होता तब सर्वाधिक रूप में गुड़ नहीं खाने की आखड़ी ली जाती है। गांव में तो अब भी गुड़ ही का खानपान अधिक प्रचलित है।

इन दिनों अखबार में खबर आई कि उदयपुर के आसपास के गांवों में पुरानी चाल की अब भी चरखियां देखने को मिल रही हैं। उन्हें अब बैल नहीं, बैल की जगह मोटरसाइकिल चला रही है तो मुझे उस धुर बचपन में देखी अपने गामड़े की चरखियां याद हो आईं।

गन्ने के खेत जिन्हें बाड़ कहते हैं, में एक-एक गन्ना 15 फीट तक की ऊंचाई लिए होता। पांच-पांच फीट तक का तो उनका ऊपरी हिस्सा बाण ही होता जो अनुपयोगी होता है। पूरे गन्ने में पौन-पौन, एक-एक फीट की पंगेरियां होतीं जो रस से सराबौर होतीं। पंगेरी एक-दूसरी से जुड़ी रहती हुई भी स्वतंत्र अस्तित्व लिए होती।

एक-एक पंगेरी के सिरे पर एक-एक आंख होती। बोने के लिए यह पंगेरी बोई जाती। एकबार की बुवाई में दो बार इस फसल का उत्पादन होता। एक फसल को तैयार होने में 18 महीने लगते। दीवाली के बाद फसल की कटाई प्रारम्भ होती। जहां कटाई होती उसके पास ही चरखियां शुरू हो जाती। तब आज जैसी लोहे का चरखियां नहीं होता। प्राय: लकड़ी और पत्थर की बनी चरखियां होती थीं जिन्हें दो बैल चलाते जैसे रहंट चलाते हैं। चरखिये के ऊपर करीब चार-पांच मीटर की लम्बाई लिए लकड़ी का एक पाट होता जिसके दूसरे सिरे से बैलों को जोत दिया जाता। यह पाट हाल कहलाता।

चरख्ये में पेलकर गन्ने का रस निकाला जाता है जिसे बड़े कड़ाहे में उकाला जाकर गुड़ बनाया जाता है। कड़ाहा नांद नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसके नीचे भट्टी में लगातार ताप देते हुए रस को उबाला जाता है। रस गाढ़ा होने से पूर्व उबला तरल रस काकब कहलाता है जिसका स्वाद ही कुछ निराला अच्छा होता है। यह स्वाद न रस वाला और न गुड़ वाला होता है। चरख्ये से निकला गन्ने का रस जो भी उधर से निकलता उसे बुलाकर पिलाया जाता है। गांवों में आज भी ऐसे किसी अजनबी तक की आवभगत की जाती है। इस रस में अदरक, नींबू का रस और काला नमक मिलाकर उसके स्वाद को और अच्छा बना बराती की तरह मनुहार कर पिलाया जाता है।

उस समय का तीनों तरह का स्वाद आज भी मेरी जबान पर उतर आता है। चरख्ये का धुंआ और उस धुंए में उबलते-उकलते गाढ़ा बनते रस की खुशबू आसपास के वातावरण में फैल कर अरनिये जैसे छोटे से गांव को कुछ घण्टों तक एक नई ताजगी और खुशबू से तर किये रहता था। रस जब गाढ़ा हो जाता तो गुड़ बनाने की प्रक्रिया का शुभारम्भ हो जाता।

ऐसी स्थिति में पहले से तैयार पास ही जमीन में बने छोटे-छोटे गड्ढों में वह रस डाल दिया जाता जो ठण्डा होकर जमने पर गुड़ बन जाता। गुड़ को एक विशेष शक्ल में बांधने के लिए खड्डों में कोई मोटा कपड़ा या तप्पड़ बिछा दिया जाता जिस पर जमा गुड़ भेली कहलाता। यह भेली बाजार में बिकने पहुंच जाती जो लम्बे समय तक सुरक्षित रहती।

चरख्ये में जब-जब गन्ना पेला जाता तो गन्ने का छिलका अलग से निकल एकत्र होता रहता। यह छिलका छूंता कहलाता जो रसहीन होता। यह भी पशु आहार के अलावा सूखने पर जलाने के काम आता। इसकी ताप बड़ी तेज और गहरी होती हुई सुहावनी लगती।

इस प्रसंग में लोगदृष्टा कवि बावजी चतुरसिंहजी का लिखा एक दोहा याद हो आता है जिसमें वे कहते हैं कि रहंट और चरखी दोनों ही चलते हैं पर दोनों के चलने में फर्क है। रहंट तो अपने पानी से फसल को हरीभरी करता है जबकि चरख्या तो गन्ने के छिलकों का ढेर ही करता है-

रेंट चले चरख्यो चले,
पण चलबा में फेर।
यो तो बाग हर्‌यो करे,
वो छूंता को ढेर।।

अरनिया छोड़े लगभग सात दशक होने आये पर वह गांव और तब के मेरे साथी नानारामा, दल्या, बाबरिया और कंकू, मथरी, तलसी तथा बड़ेरों में हेमा बा, भेरा बा पटेल, प्यारा काका, मोतीबा, भेरा दादा, देऊजीजां, बाबीमां, चतरभजजी, ऊंकारा तथा मन्ना मीणा को भूला नहीं हूं। चरखी के दौरान पिया गन्ने का रस, गुड़-काकब का स्वाद ही मिठास नहीं दे रहा, चरखी की चरड़-मरड़ और नांद में पकते गुड़ की खदबदी मीठी महक भी कम स्वाद वाली नहीं थी।

टीवी पर भूत से मेरे मन का वहम

मैंने एक दिन टीवी पर भूत की पिक्चर देखी। उस दिन से मेरे दिमाग में बैठ गया कि भूत होते हैं। एक दिन अकस्मात् बिजली चली गई। मुझे लगा कि अंधेरे में से कोई भूत निकलकर मुझे पकड़ लेगा। रात के अंधेरे से डर रही थी। एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना चाहती थी, पर डर के मारे पैर नहीं हिला पा रही थी।

घर में मेरी मम्मी मुझे देख रही थी। उन्होंने पूछा, बिटिया सोनाक्षी! क्या हुआ? तुम डर क्यों रही हो? मैं बोली, मम्मी! मैं अंधेरे से बहुत डरती हूं। मुझे लगता है कि अंधेरे में से कोई भूत निकल कर मुझे पकड़ लेगा। यह कह मैं डर से कांपने लगी। मम्मी बोली, बिटिया! अंधेरे से मत डरा करो। जब भूत होता ही नहीं है तो उससे क्यों डरती हो? यह सब तुम्हारे मन का वहम है। जब तुम्हें डर लगे तो ईश्वर का नाम ले लिया करो। इससे तुम्हारे मन में बैठा डर गायब हो जाएगा। तुम्हें कोई भी हानि नहीं पहुंचा सकेगा। मम्मी की बात सुनकर मेरे मन को शक्ति मिली। ईश्वर को याद करने से डर नहीं लगता। उसके बाद मेरे को कभी डर नहीं लगा।

-सोनाक्षी मेघवाल

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 दिसंबर 2020

सम्पादकीय

लेखकीय स्वाभिमान का दौर

ऐसा कहा जा रहा है कि यह समय लेखकीय स्वाभिमान का नहीं रहा जबकि हर काल, हर युग में लेखकीय स्वाभिमान की तूती बोलनी चाहिये। ऐसी स्थिति में कई प्रश्न उठते हैं। मसलन कहां गया लेखकीय स्वाभिमान ? कौन जिम्मेदार है उस स्वाभिमान के खोने का ? कैसे और क्या करने से वह लौट सकता है ? साहित्यकारों से ही यदि इन सवालों का जवाब पूछा जाय तो विभिन्न मत मतान्तर सुनने को मिलेंगे।

एक तबका वह है जो यह कहते सुना गया है कि साहित्यकार और उसका सृजन पक्ष दोनों भिन्न नहीं हैं। उन्हें एक ही तराजू के दो पलड़े कहा जा सकता है। यदि तराजू के दोनों पलड़े समान नहीं होंगे तो दोनों में द्वेत और अन्तर्द्वन्द्व देखने को मिलेगा जबकि दूसरा पक्ष कुछ भिन्न राय लिये है। उसका कथन है कि सृजन पक्ष नितान्त अलग है। उसका सृजनकार से हम गहरा सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते। साहित्यकार का प्रभाव तभी बना रहता है जब उसके कथन, लिखन और रहन में अन्तर नहीं होता है।

ऐसा कैसे सम्भव होता है जब साहित्यकार का रहन-सहन किसी बेढ़ब ढंग का हो। सामाजिक जो तौरतरीके बने हुए हैं उनसे विपरीत आचरण लिये हो लेकिन तब भी वह उत्कृष्ट सृजन दे सकता है। व्यक्ति कई अवगुणों का धारक होकर भी लेखक बना रहता है जबकि दूसरी ओर उसके गुणवान रहते भी वह उस तरह की ख्याति अर्जित नहीं कर सकता। वह हेंड-टू-माउथ ही रहता है।

एक ध्वनि यह भी है कि अभाव से निकला व्यक्ति अपने सृजन को तीखी धार देने वाला होता है। बड़े शहरों में रहने वाले श्रेष्ठ साहित्यकार अक्सर उन गांवों के होते हैं जहां उनका जीवन-परिवेश अभावों में व्यतीत हुआ है। यह भी एक पक्ष है कि जो साहित्यकार अपना साहित्यिक खेमा नहीं बना सकता वह श्रेष्ठ सृजनधारी होते हुए भी मूल्यांकन के अभाव में अचर्चित ही बना रहता है। सिक्केबाज अथवा ठप्पेबाज साहित्यकार पोचा भी होता है तब भी चल निकलता है जैसे चलन में कई बार खोटा सिक्का भी बाजी मारता लगता है।

यहां लेखकीय स्वाभिमान और उसका अहम यानी अभिमान भी मुख्य भूमिका लिए होता है। एक लेखक में स्वाभिमान तो होना ही चाहिए पर अभिमान तो अन्ततोगत्वा उसे नीचा ही गिराता पाया जाता है।

युवा संगीतकारों को छात्रवृत्ति

उदयपुर (विज्ञप्ति)। नेशनल सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए) भारत में कला एवं संस्कृति के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए लगातार पहल करता रहा है। एनसीपीए 2009 से ही सिटीबैंक के साथ हाथ मिलाकर ऐसे युवा प्रतिभा संपन्न छात्रों को छात्रवृत्ति देता आया है, जो हिंदुस्तानी संगीत (गायन एवं वाद्य) के क्षेत्र में उच्च प्रशिक्षण हासिल करना चाहते हैं। इस वर्ष गायन खयाल / ध्रूपद और वाद्य - तबला / पखावज के लिए सिटी-एनसीपीए छात्रवृत्तियां दी जा रही हैं। अठारह से पैतीस वर्ष के आयु वर्ग की प्रवृष्टियां 15 जनवरी 2021 तक पहुंचने पर मान्य होंगी।

एनसीपीए में भारतीय संगीत की हेड प्रोग्रामिंग डॉ. सुवर्णलता राव ने बताया कि उम्मीदवार के बायोडाटा को ही इस छात्रवृत्ति के लिए आवेदन माना जाएगा। ख्याल / वाद्य यंत्र के लिए आयु 18 से 30 वर्ष (1 मार्च 2021 को) ध्रूपद के लिए आयु 18 से 35 वर्ष (1 मार्च 2021 को) होनी चाहिये। अन्य नियमों में अप्रैल 2021 से मार्च 2022 के बीच संगीत के क्षेत्र में कोई अन्य छात्रवृत्ति अथवा अनुदान पाने वाले आवेदन के योग्य नहीं हैं। किसी कंपनी में पूर्णकालिक अथवा अंशकालिक पेशेवर के रूप में कार्यरत उम्मीदवार आवेदन नहीं कर सकते।

आकाशवाणी में 'ए' ग्रेड सहित पेशेवर संगीतकार आवेदन के योग्य नहीं हैं। कूरियर से भेजे गए आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे। केवल भारतीय नागरिक आवेदन के पात्र हैं, 15 जनवरी के बाद प्राप्त आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे, एनसीपीए चयन समिति का निर्णय अंतिम होगा प्रतुख है। आवेदन ncpascholarships@gmail.com पर भेजना होगा।

जैनविद्या मनीषी प्रो. सागरमल जैन का इन्तकाल

भारतीय दर्शन, संस्कृति, जैनविद्या और प्राकृत आगमों के तलस्पर्शी मनीषी प्रो. सागरमल जैन का 2 दिसम्बर को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। प्रो. जैन 1964 से 1989 तक इन्दौर, ग्वालियर, भोपाल में दर्शनशास्त्र के व्याख्याता रहे।

वे भोपाल के हमीदिया कालेज में मुख्यमन्त्री शिवराजसिंह चौहान के शिक्षक भी रहे। पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी में उनके निर्देशन में लगभग 60 विद्वानों ने पीएच. डी. की। इतनी ही उनकी पुस्तकें हैं। श्रमण नामक शोधपत्रिका भी सम्पादित की।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग तथा महावीर परिषद के समारोह में उन्हें व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। सन् 1985 में असेम्बली ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स तथा 1993 में पार्लियामेन्ट ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स में अमेरिका में उन्होंने जैनधर्म का प्रतिनिधित्व किया। कनाडा, अमेरिका, यूरोप के अनेक शहरों में उनके व्याख्यान चर्चित रहे।

सन् 1998 में शाजापुर में उन्होंने प्राच्यविद्या शोधपीठ की स्थापना कर 15 हजार पुस्तकें और 700 पाण्डुलिपियों का अलभ्य संग्रह किया। राष्ट्रपति पुरस्कार सहित वे अनेक पुरस्कारों से नवाजे गए। **-प्रो. प्रेमसुमन जैन**

हिंदी-राजस्थानी के डॉ. छंगाणी ने अंतिम स्वांस ली

राजस्थानी तथा हिन्दी के सजग लेखक डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी ने 06 दिसम्बर को अन्तिम स्वांस लेते अपनी इहलीला समाप्त की। जैसलमेर निवासी डॉ. छंगाणी रेगिस्तानी लोकधर्मी जीवनपद्धति तथा परिवेश के प्रामाणिक अध्येता तथा शोधकर्मी थे। कवि, कथाकार तथा ललित लेखन के क्षेत्र में वे अन्तिम समय तक सजग रहे। राजभाषा प्रबन्धक रहते हिन्दुस्तान जिंक के उदयपुर मुख्यालय तथा अन्य केन्द्रों पर वे निरन्तर हिन्दी संगोष्ठियां तथा कवि सम्मेलन आयोजित कर विद्वानों को आमंत्रित करते रहे। शायर इकबाल सागर ने बताया कि उनके समय में वहां कार्यरत सभी अधिकारी तथा कर्मचारी भी उनकी उपलब्धियों से प्रभावित थे।

डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर ने कहा कि डॉ. छंगाणी जैसे और भी साथी हमारे बीच रहे जिन्होंने अन्तिम समय तक अपने बहुआयामी सृजन द्वारा मां भारती को समृद्ध किया किन्तु हम ठीक से उनका मूल्यांकन नहीं कर सके। डॉ. ज्योतिपुंज ने आकाशवाणी केन्द्र द्वारा प्रसारित उनके सृजन समय को प्रभावी बताया। डॉ. देव कोठारी ने साहित्यकारों के प्रति उनके सौहार्दजनित व्यवहार की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि डॉ. छंगाणी रेगिस्तानी लोकचेतना के उन पुरोधाओं में से थे जो सबरंग जानकारी से समृद्ध अधिकारपूर्वक अपने विचार व्यक्त करते थे। डॉ. तुक्तक ने कहा कि शब्द रंजन के लिए जब-जब भी कोई लेखन सहयोग चाहा, उन्होंने उसकी पूर्ति की। कमर मेवाड़ी, प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़, किशन दाधीच, डॉ. कहानी भानावत, डॉ. कविता मेहता, डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, डॉ. कुंदन माली ने एक यारबाज महफिल शोभते लेखक के असामयिक निधन को अपूरणीय क्षति बताया।

- डॉ. कहानी भानावत

प्रतापसिंह बड़गांव के उपप्रधान बने

उदयपुर (विज्ञप्ति)। बड़गांव पंचायत समिति के उपप्रधान पद पर भाजपा के प्रतापसिंह राठौड़ को निर्वाचित घोषित किया गया। उन्होंने कांग्रेस के भुवनेश व्यास को 3 वोट से पराजित किया।

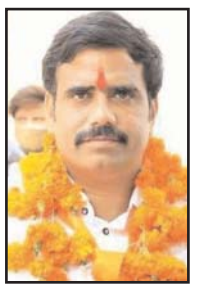

रिटर्निंग अधिकारी अर्पणा गुप्ता की उपस्थिति में समस्त 15 सदस्यों ने वोट डाले। मतगणना के बाद प्रतापसिंह राठौड़ को निर्वाचित घोषित कर पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। प्रतापसिंह को एक निर्दलीय सदस्य सहित नौ वोट जबकि भुवनेश को छह वोट हासिल हुए।

इन्दिरा आईवीएफ के अब देश में 93 केंद्र

उदयपुर (विज्ञप्ति)। देश के 21 राज्यों में पहुंच और 93 प्रभावी केंद्रों के माध्यम से इन्दिरा आईवीएफ भारत में सबसे बड़ी फर्टिलिटी क्लीनिक श्रृंखला है। चिकित्सकों की मदद से संस्थान ने 70,000 से अधिक दम्पतियों को संतान पैदा करने में मदद की है। इन्दिरा आईवीएफ की शुरूआत उदयपुर में हुई थी। इन्दिरा आईवीएफ के संस्थापक डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि हमने ऐसे समय में शुरुआत की जब नि:संतानता से जुड़ा सबसे बड़ा मिथक था कि यह एक महिला-केंद्रित स्थिति है। हमने विज्ञान को आगे रखते हुए जागरूकता फैलाने और गलत धारणाओं को समाप्त करने के लिए अपने तरीके से काम किया।

सह-संस्थापक डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि इन्दिरा आईवीएफ में सहायक प्रजनन तकनीक से जन्मी पहली बच्ची नव्या 25 नवंबर को दस साल की हो गई। भारत के विभिन्न हिस्सों से कई लोग हमारे पास इलाज के लिए आए। तभी हमने राजस्थान के बाहर विस्तार करने का फैसला किया और दस साल में भारत में हमारे 93 केंद्र हो गए हैं। हम एक लाख से अधिक आईवीएफ साइकिल्स कर चुके हैं। निदेशक, नितिज मुर्डिया ने कहा कि टेक्नोलॉजी ने हमारी यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। हमने क्लोज्ड वर्किंग चेंबर्स टेक्नोलॉजी को काम में लिया है।

पारस जे. के. हॉस्पिटल उदयपुर का सर्वोच्च सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल बना

उदयपुर (विज्ञप्ति)। उदयपुर के सर्वोच्च सुपरस्पेशलिटी स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में से एक पारस जे. के. अस्पताल ने एक साल पूरा कर लिया है। अस्पताल के निदेशक विश्वजीत कुमार ने कहा कि पिछले एक साल में हमने रोगियों को देखभाल की उत्कृष्ट गुणवत्ता प्रदान की है। डॉक्टरों, नर्सों और कर्मचारियों की टीम ने हजारों रोगियों की जान बचा उचित इलाज किया है।

पारस जे. के. अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. मुर्तुजा हबीब ने कहा कि आने वाले वर्षों में हम क्लीनिकल एक्सीलेंस के संदर्भ में अपने स्तर को और अधिक बढ़ाने का प्रयास करेंगे। उदयपुरवासियों के साथ जुड़ने और स्वास्थ्य के लिए जागरूकता पैदा करने के लिए नए कार्यक्रम शुरू करेंगे। पिछले एक वर्ष में 1000 से अधिक सर्जरी के साथ 300 से अधिक कोरोना रोगियों का इलाज किया गया।

अपना देश : अपनी संस्कृति

गाय-बैल दागने के निशान ब्राह्मी लिपि के अवशेष

हेड़ाऊमेरी रम्मतों तथा सत्ता स्मारकों के अध्ययन के सिलसिले में जब बीकानेर जाना हुआ तो भारतीय विद्यामन्दिर शोध प्रतिष्ठान में श्री मूलचन्द 'प्राणेश' ने मुझे कहा कि मेहंदी, सांझी, माण्डणा, गूदना, थापा आदि चित्रावणों के अध्ययन के साथ-साथ पशुओं में प्रचलित विविध दागों पर भी मुझे कुछ काम करना चाहिये।

पशुओं को दागने के अलग-अलग तरीके हैं। चुराये गए पशुओं की शिनाख्त के अतिरिक्त सामान्य पहचान के लिए भी उन्हें दागा जाता रहा है। दागने की यह क्रिया 'अटेरना' तथा दाग के निशान 'गोड़लिया' कहलाते हैं। पशुओं में आई बीमारी को दूर करने के लिए भी कई तरह के दागों का प्रचलन रहा है।

श्री प्राणेश ने मुझे यह भी बताया कि दागने की यह परम्परा जानवरों में ही प्रचलित रही हो, ऐसी बात नहीं है। बाबा रामदेव के समय में हाथ पर दाग दिया जाता था तब लोग द्वारका जाकर अपने हाथों पर शंख, चक्र, गदा और पद्म का दाग लगवाते थे। इनमें शंख व चक्र बाहुओं में तथा गदा व पद्म कलाइयों में दागा जाता था।

फरवरी 1978 को जब फिर बीकानेर जाना हुआ तो तय कर लिया था कि इस बार पशुओं में प्रचलित विविध दागों पर अच्छी जानकारी प्राप्त करूंगा। फलत: मैं वहीं रह रहे अपने लेखक-समधी श्री उदय नागोरी के साथ हो लिया। उन्होंने मुझे बीकानेर के कोटगेट, गूजरों का मोहल्ला, जस्सूसर गेट, चौखूंटी, गजनेररोड़, नयाशहर, भूट्टों का बास, सागररोड़, दाऊजी मार्ग आदि मोहल्लों, मार्गों तथा बीकानेर के पास के उदयरामसर, गंगासर, भीनासर, नोखा, पलाना, देशनोक, करमीसर, लालगढ़ आदि क्षेत्रों का भ्रमण कराया।

कई लोगों से पूछताछ की तो मालूम हुआ कि पशुओं के ये चिन्ह कहीं जाति विशेष के, कहीं अंचल विशेष के, कहीं विशिष्ट राजघराने के प्रतीक हैं तो कुछ विशिष्ट चिन्ह पशुओं में पाई जाने वाली बीमारी को शमन करने के द्योतक हैं।

इन दागों में बीमारी के दाग तथा किसी विशिष्ट पहचान और प्रतीक के दागों की अपनी विशेषता बनी रही है। इनमें प्रकृति के विविध उपादान, धार्मिक आस्थाओं के प्रतीक चिन्ह, मानवाकृतियां, विविध कृषि उपकरण तथा दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं के विभिन्न आंकों का समावेश मिलता है। कुछ लोग इन गोड़लियों के मूल में ब्राह्मी लिपि के अक्षरों की परिकल्पना करते हैं। हमने अपनी अध्ययन यात्रा में गायों, ऊंटों तथा बैलों-सांडों में प्रचलित दागों का ही विशेष अध्ययन-संधान किया। ये दाग लोहे के सरिये, मिट्टी की ढकणी, लोहे-पीतल के अक्षर अथवा किसी वृक्ष विशेष की डाली को गर्म कर दिये जाते हैं।

पशुओं को दागने के ये अंकन विविध रूपों में सारे राजस्थान में प्रचलित रहे हैं। मेवाड़ क्षेत्र में क्या पशु और क्या मनुष्य, सभी को दागने की क्रिया 'डाम' के रूप में प्रचलित है। बीमारी की हालत में तो डाम ही एकमात्र रामबाण इलाज था। इधर तो एक कहावत भी सुनने को मिलती है- 'कै तो राखै राम नै कै राखे डाम' (या तो राम ही जीवित रख सकता है या फिर डाम)।

दागने-डाम देने का भी अपने आप में पूरा शास्त्र और विज्ञान है। कहां किस बीमारी के लिए किसका, किस नस विशेष या स्थान विशेष पर दाग लगाने से बीमार स्वस्थ हो जाता है, इसके लिए जानकार लोग अब भी गांवों में इलाज करते हैं।

इन दागों के अलग-अलग नाम, उपकरण, रंग-ढंग हैं, जैसे लुरकी खांसी में ढाक के पत्ते की बींटणी का, ज्वार के दाने जैसा जपेट्या लगाया जाता है तो सिर दर्द में भौंहों के मुख पर सुई का चपकट्या दजाया जाता है।

लोकजीवन में विविध वार त्यौहारों, उत्सवों, अनुरंजनों पर जो विविध अंकन दीवारों, आंगनों तथा अन्यान्य जगहों पर देखने को मिलते हैं वे भी बहुत कुछ इन गोड़लियों से मिलते-जुलते हैं। ये सब आदिम संस्कृति के रूप-प्रतिरूप हैं, जिनका अध्ययन हमारे सांस्कृतिक इतिहास के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

शेर से कुश्ती, चीते की सवारी

आदमी की सामर्थ्य को कैसे पहचानें, किससे तुलना करें। किस तरह उसे समझे और परिभाषित करें। सच तो यह है कि कई लोग छिपे रूस्तम होते हैं और ऐसे भी कि वे क्षणिक अपनी चमक बता भी दें तो जुगनू की तरह ही उसे सबकी निगाहों से ओझल कर दिया जाता है। शेर नाम सुनते ही अच्छे-अच्छों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं फिर उसे प्रत्यक्ष देखना और कइयों के बीच उससे कुश्ती करने वाला व्यक्ति कितना बलधारी हो सकता है, इसका अंदाजा मुश्किल से ही लगाया जा सकता है।

ऐसे ही एक नारबा थे जिन्हें बड़े 'नारजी' और छोटे 'नारबा' कहते थे। वे सदैव अपने पास 6 कटारें रखते। एक-एक दोनों हाथों में, एक-एक दोनों पांवों के नीचे और एक-एक कमर के दोनों ओर। कटारें अपने पास रख वे कहीं भी चले जाते।

एकबार महाराणा फतहसिंहजी ने उनकी बहादुरी के बारे में सुना कि नारजी किसी भी हिंसक जानवर की शिकार करने में तो बड़े पहुंचे हुए शिकारी हैं ही पर जंगली हिंसक जानवरों से कुश्ती लड़ना भी कोई उनसे सीखे। अपने नामानुरूप नार यानी शेर से कुश्ती करने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं होती। महाराणा ने सहज भाव से कहा, कोई दिखाये तो पता चले कि मेवाड़ में शेर योद्धा ही नहीं, शेर से लड़ने वाला योद्धा भी है।

यह सुन नारजी को बुला एक पिंजरे में शेर को डालकर कुश्ती-दंगल का आयोजन किया गया। नारजी बड़े खुश थे कि आज मेवाड़नाथ मुझ अदने से नार की कुश्ती देखेंगे। नारजी को महाराणा का आदेश पाते ही पिंजरे में दाखिला दे दिया गया। उन्होंने नार से कुश्ती कर जो शौर्य दिखाया उससे महाराणा बड़े खुश हुए और उसका सम्मान किया।

नारजी के पोते रामसिंह झाला ने मुझे बताया कि नारजी की तरह उनका खेतीवाला हीजारी नाथू गमेती भी बड़ा बहादुर, निर्भीक और निडर था। एकबार एक चीता रात को खेत में घुस आया। नाथूबा ने एक आवाज सुनी तो उन्हें लगा कि एक गाडरे को किसी ने दबोच लिया दिखता है। नाथूबा आग ताप रहे थे। सर्दी के दिन थे। एक जानवर उनके सामने आया। उन्होंने उसे एक बड़ा सा जंगली कुत्ता समझ लिया और उसके कान पकड़कर पीठ पर बैठ गये। दोनों कानों को उन्होंने इस बुरी कदर जोश से दबाये रखा कि वह टस से मस नहीं हो सका। फिर जब वह बेसहारा हो गया तो उन्होंने उसे छोड़ दिया। कहा- जा, भाग जा, अब आया तो खैर नहीं।

यह कहते ही वह तेजी से भागा। नाथूबा ने उसे देखा तो वह कुत्ता नहीं चीता था। उसे भागते देख वे भी भौचक्के रह गये और उनकी रूह क्षणभर के लिए कांप गई।

रामसिंह ने बताया कि सन् 1960 में 80 वर्ष की उम्र में नाथूबा का शरीरांत हुआ। यह वाकया जब नाथूबा ने अपने मालिक नारबा को कह सुनाया तो तत्काल नारबा कुल्हाड़ी लेकर निकले। उन्होंने चीते को थोड़ी दूर जंगल में हांफते-कांपते देखा। वे उसके पास पहुंचे और कुल्हाड़ी के एक ही वार से उसका काम तमाम कर दिया। रामसिंह ने बताया कि नारजी राणा गांव के वासींदे थे जहां महाराणा प्रताप ने उमरे खाये। वनबिलाव द्वारा उनके पुत्र के हाथ से रोटी छीन ले जाने की घटना भी उसी दौरान घटित हुई।

छापाखाने से संबंधित मशीनों के दक्ष कारीगर के रूप में रामसिंह से मेरा परिचय उदयपुर में हुआ जब मैं मंगल मुद्रण नाम से छापाखाना चलाता था। रामसिंह ने बताया कि गोगुंदा के आसपास का क्षेत्र बड़ा ही ऐतिहासिक है। राणा उमरा गांव भी इसीलिए प्रसिद्धि लिए है कि जहां उमरा खाये वहां गांव बसा जिसका नाम भी उमरा खाने की याद को बनाये रखना था।

रामसिंह ने गोगुंदा के घोड़ों की प्रसिद्धि का बखान करते बताया कि उनका मुकाबला अन्य घोड़ों से संभव नहीं था। कोटा ठिकाने की गणगौर का अपहरणकर्ता लालसिंह भी गोगुंदे के घोड़े पर ही सवार होकर गया था।

यहां के ऐसे होनहार घोड़े थे कि उन पर बैठकर एक दिन में सौ कोस तक की यात्रा की जाती थी। एक अंग्रेज ने गोगुंदा के घोड़े के साथ अपनी मोटरसाइकिल का उदयपुर की फतहसागर पाल पर मुकाबला किया तो घोड़े ने ऐसी चौकड़ी भरी कि मोटरसाइकिल लांघकर आगे निकल गया। रामसिंह ने बताया कि घोड़ों को बादाम का हलुआ और जलेबी खिलाते तो उन्होंने भी देखा है।

- म. भा.

बालकों में पलता सार्थक-निरर्थक संवाद

कहते हैं बालकों की कल्पना शक्ति बड़ी तीक्ष्ण और जागरूक होती है। वे हर समय कुछ-न-कुछ सोचते रहते हैं। उनके मन में बहुत सारी विचारणाएं ऐसी चलती हैं जो कोई सार्थक अर्थ नहीं रहतीं पर वे अपनी बाल-बुद्धि से कोई-न-कोई तुकबन्दी ऐसी जोड़ते रहते हैं जो निरर्थक लगती हुईं भी अपना कथन कह देती हैं। सुनने वाले भी उनका आशय समझ जाते हैं और तुरता-फुरती उसमें अपना जोड़ देते वातावरण को मजेदार तथा रसवान बना देते हैं। कुछ नमूने यहां प्रस्तुत हैं। अनुप्रास की छटा देता गांव के नाम पर यह व्यंग्य-

(1) कानोड़ रो कांदो, बाप पड् यो मांदो।
(2) बंबोरा री बाटी लै घाघरो नाटी।

इसमें कानोड़ और बंबोरा उदयपुर जिले के गांव हैं। कांदे से तात्पर्य प्याज तथा मांदे का अर्थ बीमार से है। बाटी का अर्थ दाल-बाटी भोजन तथा नाटी से तात्पर्य भागने से है।

किसी को चिढ़ाने के लिए उसके नाम के साथ फब्ती कसने और हंसी उड़ाने के लिए कहा जाता है-

(1) मदन मदारी, फूटी तगारी /
तगारी में तेल, मदन वेइग्यो फेल।
(2) अम्बालाल, चने की दाल /
उड़ गई टोपी, रह गये बाल।

धूप में मेह बरसने पर कहा जाता है-

तावड़े-तावड़े मई वरै / फौज्या बा रो घर बलै।

सर्दी के दिनों में सूखी घासफूस इकट्ठी कर बालक अग्नि प्रज्वलित कर तापते हैं। इस दौरान जो भी उसमें आ सम्मिलित होता है उसे जलाने योग्य सामग्री लाने को मजाकी लहजे में कहा जाता है-

हूकी फूकी लावो भाई, बाप ने तपावो भाई।
बाप दीधी तूंबी, मांग-मांग खावो भाई।।

खेलते वक्त कभी-कभी मौज में आकर बच्चे आपस में छोटी-छोटी तुकें जोड़ते संवाद आगे बढ़ाते तुक-में-तुक देते लयबद्ध कथन कहकर अर्थ विहीन संवाद भी अन्त में सार्थक बनाकर कोई पतै की बात कह जाते हैं। यथा-

एक आने की बारह पाई।
उसमें से निकला नार सिपाई।।
नार सिपाई का आटा।
उसमें से निकला मोड् या कांटा।।
मोड् या कांठा का गाबा।
उसमें से निकले अंदरजी भाबा।।
अंदरजी भाबा रो मोटो पेट, पेट रे दो पाया।
धीरे-धीरे चालो सेठजी, मरवा रा दन आया।।

पूर्व में एक रूपये में सौलह आने तथा एक आने में बारह पाई (पैसे) होते थे। नाहर नाम का सिपाई। कांटा, कांठा नामक जाति विशेष। मोड् या से तात्पर्य मोड़ीलाल या बदमाश। गाबा से मतलब पहनने के कपड़े। अंदरजी का शुद्ध नाम इन्दरजी। भाबा मोट्यार याकि उम्र याप्ता महिला। बड़ा पेट या कि तोंद होने पर चलने के लिए उसे सहारा देना।

पालने झुलाते शिशु को झूला देते समय सुनाया जाने वाला कर्णप्रिय गीतबंध-

नान्या रे नान्या सुई जा।
थारी बाई पाणी गी।
घर में गंडकड़ा वारी गी।
एक गंडकड़ो घटीग्यो।
नान्या रो नाक कटीग्यो।

अर्थात् नन्हे बालक सो जा। तेरी मां पानी लेने गई। घर में कुत्ते बन्द कर गई। एक कुत्ता कम हो गया। नन्हे का नाक कट गया।

- डॉ. तुक्तक भानावत

कोरोनाकाल में ट्रेडिशनल हर्ब न्यूट्रीशन में बढ़ा लोगों का रूझान

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोरोना महामारी ने लोगों की जीवन तथा उनके खानपान की शैली में जबर्दस्त बदलाव कर दिया है।

एमवे इंडिया के सीईओ अंशु बुधराजा ने कहा कि एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 51 प्रतिशत से अधिक परिवारों ने तुलसी, अदरक, हल्दी, आंवला और इसी तरह की अन्य कई जड़ी-बूटियों तथा पारंपरिक अवयवों को अपने आहार का हिस्सा बना लिया है। आने वाले वर्षों में इस श्रेणी के लिए बड़ी संभावनाएं उभर कर सामने आई हैं। बाजार के मौजूदा परिदृश्य को देखते हुए उम्मीद की जा रही है कि समग्र पोषण श्रेणी में पारंपरिक जड़ी-बूटियों का योगदान 10 प्रतिशत से बढकर 2024 तक 20 प्रतिशत तक पहुंच जाएगा। समग्र पोषण और कल्याण समाधानों के प्रति तेजी से उपभोक्ताओं का झुकाव बढ़ रहा है, जो हमें वापस अपनी पारंपरिक मान्यताओं की ओर ले जा रहा है। 'स्थानीय मान्यताओं में वापसी' होने से पूरा परिदृश्य ही धीरे-धीरे बदल रहा है। इस साल पारंपरिक जड़ी-बूटियों की श्रेणी से उन्हें 100 करोड़ रुपए की बिक्री होने की उम्मीद है। भारत सरकार के 'मेक इन इंडिया' अभियान में भी उच्च गुणवत्ता वाले पोषण उत्पादों के निर्माण व स्थानीय रूप से प्राप्त की गई सामग्री के प्रयोग को प्राथमिकता दी जा रही है।

'नमन' योजना में आर्म्ड फोर्स के शहीदों को मिलेगा मुफ्त सीमेंट

उदयपुर (विज्ञप्ति)। श्री सीमेंट की अनोखी सेवा पहल 'प्रोजेक्ट नमन' का उद्घाटन भारतीय सेना की सर्दन वेस्टर्न कमांड के पीवीएसएम, वीएसएम, जीओसी-इन-सी लेफ्टिनेंट जनरल आलोक क्लेर ने किया। प्रोजेक्ट नमन के तहत 1 जनवरी 1999 से 1 जनवरी 2019 (20 वर्ष) के बीच देश के लिए शहीद हुए सैनिक के एक परिजन को 4 हजार वर्गफुट तक का घर बनाने के लिए मुफ्त सीमेंट प्रदान की जायेगी। इस योजना के तहत शहीदों के परिवार के सदस्य पूरे देश में फैले किसी भी श्री सीमेंट की उत्पादन इकाई से मुफ्त में सीमेंट प्राप्त कर सकते हैं।

इस अवसर पर लेफ्टिनेंट जनरल आलोक क्लेर ने कहा कि श्री सीमेंट द्वारा किया गया यह अद्भुत प्रयास है। देश के वीर शहीदों को इस तरह का सम्मान प्रदान करना दुर्लभ और अनोखा है। मुझे उम्मीद है कि इस तरह के सेवामूलक कार्य देखकर दूसरी कॉरपोरेट्स कंपनियां भी आगे आयेंगी। श्री सीमेंट के संयुक्त प्रबंध निदेशक प्रशांत बांगड़ ने कहा कि 'नमन' योजना शहीदों के परिवारों की आवास जरूरतों को पूरा करने के लिए बेहद मददगार साबित होगी। इस योजना को केंद्रीय सैनिक बोर्ड और राज्य सैनिक बोर्ड (आरएसबीएस) और जिला सैनिक बोर्ड (जेडएसबी), रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित किया जाएगा।

सहारा सेबी के विरूद्ध सुप्रीम कोर्ट पहुंचा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सहारा इंडिया परिवार ने सेबी के खिलाफ़ माननीय सर्वोच्च न्यायालय में अवमानना याचिका दायर की और शीर्ष अदालत से सेबी के संबंधित अधिकारियों को उनके कृत्य हेतु दंडित करने का अनुरोध किया।

सेबी द्वारा सहारा से 62,602 करोड़ रूपये जमा कराए जाने की मांग का सहारा ने विरोध किया और दावा किया कि सेबी की यह मांग एकदम ग़लत है और सेबी ने न्यायालय की अवमानना की है। सहारा ने अपील में सेबी पर सर्वोच्च अदालत को गुमराह करने और सहारा के खिलाफ़ जनआक्रोश फैलाने का अरोप लगाया और कहा कि सेबी का यह आवेदन आधारहीन व बेबुनियाद है। अपील में सहारा ने दावा किया कि शीर्ष अदालत ने दिनांक 06.02.2017 के अपने आदेश में निर्देशित किया है कि मामला मूल धन राशि से संबंधित है और ब्याज के मुद्दे का बाद में अवलोकन किया जाएगा किंतु सेबी ने ब्याज राशि को शामिल करके निर्देशों की पूरी तरह से अवहेलना की है।

नियामक के आदेश का पालन करेंगे

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक के एमडी एवं सीईओ शशिधर जगदीशन ने संदेश में कहा है कि आरबीआई ने हमें कोई भी नई डिजिटल सेवा लॉन्च करने व नए क्रेडिट कार्ड ग्राहक बनाने पर अस्थायी रूप से रोक लगाने को कहा है।

हम नियामक के इस आदेश का पालन करेंगे। इस अवधि में अपने मौजूदा ग्राहकों को भरोसा दिलाते हैं कि चिंता की कोई भी बात नहीं है। आप बिना किसी डर के बैंक के साथ विनिमय जारी रख सकते हैं। हमें अहसास है कि हमारे बहुमूल्य ग्राहक के रूप में आप हमसे सेवा की गुणवत्ता व अनुभव के बहुत उच्च स्तर बनाए रखने की अपेक्षा रखते हैं और कभी कभी हम आपकी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे हैं। इसके लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

'हेयर फॉल नहीं, अब सिर्फ जिंदगी मेरी मुट्ठी में' अभियान लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। हिमालया ड्रग कंपनी ने हैल्दी हेयर का वादा मुहिम के तहत 'हेयर फॉल नहीं, अब सिर्फ जिंदगी मेरी मुट्ठी में' अभियान के साथ हिमालया एंटी-हेयर फॉल शैंपू के लिए एक नई फिल्म का अनावरण किया।

हिमालया ड्रग कंपनी के कैटेगरी मैनेजर- हेयर केयर, विभु गंगल ने कहा कि इस लेटेस्ट अभियान में हेयर केयर की श्रेणी में ग्राहकों की आम समस्या, हेयर फॉल पर रोशनी डाली गई है। प्राकृतिक अवयवों से युक्त समाधानों की ओर ग्राहकों के झुकाव को संबोधित करते हुए इस अभियान में हेयर फॉल के एक भरोसेमंद समाधान के रूप में हिमालया एंटी-हेयर फॉल शैंपू के अद्वितीय प्रस्ताव को प्रस्तुत किया गया है। यह फिल्म वर्तमान परिदृश्य में स्थापित है और इस बात पर रोशनी डालती है कि आज की महिलाएं किस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में विजय हासिल कर रही हैं, फिर चाहे वह एकेडेमिक्स हो या फिर उनकी रुचि के क्षेत्र में आगे बढ़ने की लगन। आज हर चीज उनके नियंत्रण में है, लेकिन हेयर फॉल अभी भी एक बड़ी समस्या बना हुआ है।

अल्ट्राटेक सीमेंट करेगी 5477 करोड़ का निवेश

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अल्ट्राटेक निदेशक मंडल ने उत्पादन क्षमता में प्रतिवर्ष 12.8 मिलियन टन (एमटीपीए) के विस्तार के लिए 5477 करोड़ रूपये के निवेश को सहमति दी। इस विस्तार में ब्राउन फील्ड व ग्रीन फील्ड का सम्मिश्रण शामिल है। इस अतिरिक्त क्षमता को देश के पूर्व, मध्य व उत्तर क्षेत्र में तेजी से बढ़ते बाज़ारों में विकसित किया जाएगा।

आदित्य बिड़ला समूह के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला ने कहा कि कोर इंफ्रास्टक्चर सेक्टर में यह महत्वपूर्ण निवेश आर्थिक गतिविधियों के चक्र में तेजी लाएगा तथा निजी निवेश चक्र की शुरूआत में मदद करेगा। वर्तमान आर्थिक पृष्ठभूमि को देखते हुए, यह पूंजी परिव्यय सरकार के आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम की दिशा में उठाया गया कदम है। यह अल्ट्राटेक के भारत की नंबर 1 सीमेंट कंपनी से राष्ट्रीय चैंपियन बनने तक के सफर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन के बाद सीमेंट उद्योग अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। इसके पीछे सरकार का आधारभूत ढांचे पर जोर, ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा व्यक्तिगत गृह निर्माण क्षेत्र में मांग में वृद्धि है। अल्ट्राटेक की अखिल भारतीय उपस्थिति को देखते हुए, जिसे क्षमता विस्तार से और मजबूत किया जाएगा, देश में सीमेंट की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अल्ट्राटेक अच्छी स्थिति में मौजूद रहेगी।

पेलियेटिव एवं कॉम्प्रिहेन्सिव क्लिनिक का शुभारंभ

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पेसिफिक डेन्टल कॉलेज एवं अस्पताल देबारी, में पेलियेटिव केयर क्लिनिक का ओरल मेडिसिन एण्ड रेडियोलाजी में एवं कॉम्प्रिहेन्सिव डेन्टल क्लिनिक का जनस्वास्थ्य दंत चिकित्सा विभाग में शुभारम्भ मुख्य अतिथि चेयरमेन आशीष अग्रवाल, डेंटल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. भगवानदास राय तथा भगवान महावीर केन्सर हॉस्पीटल जयपुर के पेलियेटिव विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजुम जौहर खान ने किया।

ओरल मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मोहितपाल सिंह ने बताया कि यहां मुंह एवं गले के केन्सर के मरीजों की संपूर्ण देखभाल की जायेगी। जन स्वास्थ्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. कैलाश असावा ने बताया कि कॉम्प्रिहेन्सिव डेन्टल क्लिनिक में मरीजों को एक ही जगह पर कम समय में विभिन्न प्रकार के जरूरी इलाज प्रदान किए जाएंगे। अपने आप में यह एक अनूठी पहल है, जिसमें मरीजों के लिए सभी प्रकार की डेन्टल फिलिंग, रूट केनाल ट्रिटमेंट, दांत लगाना, दांतो की सफाई एवं मुख स्वास्थ्य संबंधित संपूर्ण जानकारी प्रदान की जाएगी।

मोतियाबिन्द का ऑपरेशन रियायती दरों पर

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में मोतियाबिन्द शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें डॉ. रचना जैन द्वारा परामर्श व उपचार प्रदान किया जा रहा है।

डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने बताया कि प्रतिवर्ष मोतियाबिन्द से कई लोगों के आंखों की रोशनी चली जाती है। इसके कारण उनका शेष जीवन अंधेरे में व्यतीत होता है। इस कारण हॉस्पिटल में रियायति दर पर चिकित्सा शिविर आयोजित किया जा रहा है। इसमें चिकित्सकीय परामर्श पर 50 प्रतिशत तथा डॉक्टर द्वारा लिखित अन्य जांचों पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जा रही है। ऑपरेशन दस हजार रुपये में किया जा रहा है जिसमें दवाइयां तथा लैंस दोनों शमिल हैं।

आरबीएल बैंक और आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस में साझेदारी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आरबीएल बैंक और आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इश्योरेंस ने ग्राहकों को जीवन बीमा उत्पादों की एक श्रृंखला की पेशकश के लिए एक साझेदारी की है। यह साझेदारी आरबीएल बैंक के 8.7 मिलियन से अधिक ग्राहकों को ग्राहक केंद्रित सुरक्षा प्राप्त करने और उन उत्पादों को खरीदने में सक्षम बनाएंगी।

आरबीएल बैंक के एमडी और सीईओ विश्ववीर आहूजा ने कहा कि बैंक आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ के उत्पादों को 28 राज्यों में फैली अपनी 398 शाखाओं के माध्यम से वितरित करेगा, जो इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग टच-पॉइंट्स हैं। ये बैंक के मल्टीचैनल वितरण नेटवर्क को अलग करते हैं। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ के लिए ये साझेदारी इसके मल्टी-चैनल वितरण नेटवर्क को और मजबूत करेगी।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के प्रबंध निदेशक और सीईओ एनएस कन्नन ने कहा कि इस साझेदारी से आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ के बीमा योजनाओं की सुरक्षा और बचत मंच पर संपूर्ण उत्पाद पेशकश बैंक ग्राहकों के लिए उपलब्ध होगा। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के सुरक्षा उत्पाद वित्तीय योजना के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं और लंबी अवधि के बचत उत्पाद के विस्तृत रेंज बैंक ग्राहकों को अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेंगे, चाहे वह धन सृजन हो, बच्चों की उच्च शिक्षा हो या सेवानिवृत्ति प्लान हो।

जीतो उदयपुर चैप्टर के राजकुमार सुराना अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जैन इंटरनेशनल ट्रेड आर्गेनाइजेशन (जीतो) उदयपुर चैप्टर के 13 दिसंबर को हुए द्विवार्षिक चुनाव में राजकुमार सुराना 52 मतों से अध्यक्ष पद पर विजयी घोषित किए गए।

मुख्य चुनाव अधिकारी वीरेन्द्र सिरोया के अनुसार जीतो के 438 सदस्यों में से 422 ने ई-वोटिंग का इस्तेमाल किया जिसमें 237 वोट राजकुमार सुराना को मिले। उन्होंने श्री सुराना को पद की शपथ दिलाई। समारोह में आलोक पगारिया, अर्जुन खोखावत, कमल नाहटा, मानिक नाहर, अशोक दोशी, अभिषेक पोखरना, रंजीत पगरिया, अजित छाजेड़, राजेंद्र जैन, तुषार मेहता, क्षितिज कुम्भट, डॉ. तुक्तक भानावत आदि मौजूद थे।

उपस्थित महानुभावों ने बताया कि कोरोना के रहते भी सदस्यों ने बड़े उत्साह से अपने मतों का उपयोग कर लोकतंत्रीय चुनाव पद्धति का ईमानदारी से निर्वाह किया। इस चुनाव की यह भी खासियत रही कि राजकुमार सुराना पहलीबार ही जीतो के चुनावी दंगल में उतरे परन्तु अपनी सुछवि तथा नेक नियत से लोकप्रियता के सर्वोच्च पायदान पर खरे उतरे। इन मित्रों ने उनसे उम्मीद जताई कि उनमें काम करने और एक-दूसरे से सहयोग लेने की जो अपूर्व क्षमता तथा दक्षता है, उसका भरपूर उपयोग करते हुए वे उदयपुर चैप्टर को चरम शीर्ष पर पहुंचायेंगे।

श्री सुराना ने इसे संकल्पों की जीत कहा। उन्होंने समाज के विद्यार्थियों के लिए उदयपुर में उच्चस्तरीय छात्रावास भवन, छात्रवृत्ति, जेएटीफ सीड लोन्स की व्यवस्था को प्राथमिकता बताते जेएटीएफ के माध्यम से उदयपुर में बैंकिंग सर्विसेज व सीए की कोचिंग के लिए राष्ट्रीय स्तर के सेंटर के लिए भी अपनी प्रतिबद्धता जताई। साथ ही हर परिवार के लिए आपात चिकित्सा निधि और सबसे बड़े घर के सपने को साकार करने के लिए बजट हाउसिंग प्रोजेक्ट, महिला और युवा सशक्तीकरण के लिए विभिन्न कार्यशालाएं, औद्योगिक भ्रमण, प्रशिक्षण, पर्यटन के साथ प्रशिक्षण के उद्देश्य से विदेश भ्रमण कार्यक्रम के प्रबंधन, सबका स्वास्थ्य-सबकी सुरक्षा के लक्ष्य के तहत न्यूनतम प्रीमियम पर मेडिक्लेम व टर्म प्लान बीमा भी उनकी प्राथमिकताओं में हैं। उन्होंने कहा कि समाज के हर व्यक्ति के उत्थान के लिए जो भी अच्छा विचार सामने आयेगा, उसका स्वागत किया जाएगा।

वेदांता द्वारा उ. प्र. में 500 नंदघरों की स्थापना

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अनिल अग्रवाल फाउण्डेशन एवं बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउण्डेशन की साझा पहल में उत्तरप्रदेश में 500 नंदघर स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। वेदांता द्वारा पहले चरण में अमेठी और वाराणसी जिलों में नए केंद्रों की स्थापना होगी।

वेदांता के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने कहा कि महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी परिणामों में सुधार पर ध्यान देने के साथ ही महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के साथ मिलकर आंगनवाड़ियों के सर्वांगीण विकास एवं सुनिश्चित बदलाव की पहल है। वर्तमान में सात राज्यों में नंदघर संचालित हैं।

बिल गेट्स ने कहा कि नंदघर भारत के स्वास्थ्य और विकास के लक्ष्यों को सार्थक तरीके से आगे बढ़ा रहा है। हम मिलकर इसे और भी तेजी से आगे बढ़ाएंगे।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री, स्मृति जुबिन ईरानी ने कहा कि भारत सरकार हर बच्चे के लिए स्वस्थ और सुपोषित जीवन को सक्षम बनाने की दिशा में प्रतिबद्ध हैं।

गीतांजली में हार्ट वेंट्रिकल की दीवारें फटने का सफल उपचार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के हृदय रोग विभाग ने गंभीर रोगी की बिना चीरफाड़ के मायोकार्डियल इन्फारकशन वेंट्रिकुलर सेप्टल रप्चर (एमआईवीएसआर) डीवाईस क्लोजर तकनीक से सफल उपचार किया। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. रमेश पटेल, डॉ. कपिल भार्गव, डॉ. डैनी मंगलानी, डॉ. शलभ अग्रवाल, इंटरवेंशनल रेडियोलाजिस्ट डॉ. सीताराम बारठ, एनेस्थेसिया विभाग से डॉ. करुणा, कार्डियक सर्जन डॉ. संजय गांधी, डॉ. संदीप, डॉ. जयेश, लोकेश व टीम ने रोगी को नया जीवन दिया है।

कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. रमेश पटेल ने बताया कि चुरू निवासी 68 वर्षीय शरबती देवी को हार्ट अटैक आने पर गीतांजली हॉस्पिटल में लाया गया। तब रोगी का हार्ट फेल हो रहा था और स्थिति काफी नाजुक थी। जांच में पता चला कि हार्ट के दायें एवं बाएं वेंट्रिकुलर के बीच की दीवार फट गयी थी। सामान्यतया इस तरह के रोगियों का बच पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। ओपन हार्ट सर्जरी में भी काफी रिस्क था इसलिए रोगी का ऑपरेशन नहीं कर पैर के माध्यम से पोस्ट एमआईवीएसआर डीवाईस क्लोजर लगाया गया जो कि दक्षिण राजस्थान में पहली बार किया गया और परिणाम सफल रहा। रोगी स्वस्थ है और उसे हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया है।

नयारा एनर्जी व शेल लुब्रिकेंट्स में भागीदारी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आधुनिक इंटीग्रेटिड डाउनस्ट्रीम एनर्जी कंपनी नयारा एनर्जी तथा फिनिशड् लुब्रिकेंट्स में विश्व की अग्रणी कंपनी शेल ने एक रणनीतिक भागीदारी की घोषणा की है। इसके माध्यम से उपभोक्ताओं को शेल लुब्रिकेंट्स के इस श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ उत्पाद उपलब्ध करवाए जाएंगे। इसमें अल्ट्रा इंजन के तेल की प्रीमियम रेंज भी शामिल है। ये उत्पाद नयारा और एस्सार के ईंधन स्टेशनों पर उपलब्ध करवाए जाएंगे। नयारा एनर्जी भारत में सबसे तेजी से बढ़ रहा निजी ईंधन नेटवर्क है। यह देश भर में 5900 ईंधन स्टेशन चला रहा है।

नयारा एनर्जी के सीईओ बी. आनंद ने कहा कि नयारा एनर्जी व शेल लुब्रिकेंट्स की यह भागीदारी दोनों ब्रांड्स की मजबूती का लाभ उठाएगी। चीफ मार्किटिंग ऑफिसर स्टीफन बेयलर के अनुसार इस भागीदारी से हमारे विस्तृत नेटवर्क के माध्यम से देशभर में उपभोक्ताओं को बेहतर अनुभव मिलेगा।

शेल लुब्रिकेंट्स इंडिया के कंट्री हेड रमन ओझा ने कहा कि नयारा एनर्जी के साभ हमारी भागीदारी इस बात का प्रतीक है कि हम दोनों के सिद्धांत समान हैं तथा हम दोनों ही उपभोक्ताओं को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अधिकतम संतुष्टि देना चाहते हैं। इस भागीदारी से हम भारत में अपनी विश्वस्तरीय टेक्नॉलाजी, उत्पादों व सेवाओं को ज्यादा संख्या में उपभोक्ताओं तक ले जा पाएंगे।

सीग्राम्स को मिले तीन अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। परनोड रिकार्ड इंडिया दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित तीन स्प्रिट प्रतियोगिताओं में सीग्राम्स ब्लेंडर्स प्राइड को मिले पुरस्कारों का जश्न मना रही है। ब्लेंडर्स प्राइड ने मोंडे सिलेक्शन 2020 में गोल्ड अवार्ड, दि फिफ्टी बेस्ट में गोल्ड मेडल और लंदन स्प्रिट प्रतियोगिता 2020 में कांस्य पदक प्राप्त किया है।

कार्तिक मोहिंद्रा, चीफ मार्केटिंग ऑफिसर, परनोड रिकार्ड इंडिया ने कहा कि मोंडे सिलेक्शन, दि फिफ्टी बेस्ट और लंदन स्प्रिट्स में सीग्राम्स ब्लेंडर्स प्राइड द्वारा तीन अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीतना बहुत खुशी का क्षण है। हम हमेशा बेहतरीन गुणवत्ता वाले उत्पादों की पेशकश करने और उपभोक्ताओं को सही मूल्य प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह उपलब्धियां हमारी गुणवत्ता की पेशकश का प्रमाण हैं, जो हमारे उपभोक्ताओं की आकांक्षाओं को पूरा करते हैं और युवाओं के लिए पसंदीदा ब्रांड के रूप में हमारी बाजार स्थिति को और मजबूती प्रदान करते हैं। सीग्राम्स ब्लेंडर्स प्राइड भारतीय अनाजों के स्प्रिट और स्कॉटिश माल्ट का एक मिश्रण है।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845,
a/c type- Current a/c)

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (3)

- देवीलाल सामर -

इस स्तंभ के पिछले अंक में राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास की लोकधर्मी कला-संस्कृति के प्रति विशेष रूचि के रहते कलामण्डल को सहयोग एवं संरक्षण देने की महती भूमिका का वर्णन आपने पढ़ा। अब पढ़िये प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का कलाप्रेम तथा कलामण्डल की वैश्विक पहचान दिलाने में अग्रणी भूमिका।

''मैं चाहता था, हमारी लुप्तप्रायः सी लोककलाओं की पुनः प्रतिष्ठा हो। उसके मर्म को समझा जाय। लोककलाकार पुनः समाज में प्रतिष्ठापित हों। उनका आदर-सम्मान हो। उनका आर्थिक कष्ट दूर हो और उन्हें उच्चतर सामाजिक स्तर प्राप्त हो। जब मैं अपनी जीवन गाथा लिख रहा हूं तब मुझे यह लग रहा है कि कला मण्डल अपने इस लक्ष्य से बहुत दूर है।''

एक-एक समय के सौ-सौ व्यक्तियों का खाना तो मामूली बात थी। व्यासजी इस बात का हर समय ख्याल रखते थे कि कौन सी चीज राज की है और कौन सी अपनी। मुझे यह भी याद है कि अनेक मौकों पर अपने निजी काम के लिए वे राजकीय कार का उपयोग भी नहीं करते थे।

अपने मुख्यमंत्री काल में जब वे प्रथमबार उदयपुर आये थे तो वे मेरे ही निमंत्रण पर आये थे। उन्होंने मुझे टेलीफोन पर कह दिया था कि मैं उदयपुर आ रहा हूं पर जयनारायण व्यास की हैसियत से आ रहा हूं, मुख्यमंत्री की हैसियत से नहीं। मैं केवल तुम्हारे चम्बल नृत्यनाटिका के प्रदर्शन के लिए आ रहा हूं।

वे जब उदयपुर पहुंचे तो हजारों लोगों की भीड़ स्वागतार्थ स्टेशन पर जमा थी। पुलिस का बैण्ड भी सलामी लेने को तैयार था। जिला कांग्रेस कमेटी ने स्वागत की पूरी तैयारी करली थी। सभी अफसर उनके स्वागत में कतार बांधे खड़े थे। मैंने अपने स्तर पर अपने घर पर उनके ठहरने की व्यवस्था कर ली परन्तु कुछ दिन पूर्व ही उदयपुर के महाराणा साहब को उनके आने की खबर लग गई। उन्होंने कहलाया कि मुख्यमंत्री जब उदयपुर आवें तो वे मेरे मेहमान होंगे।

मैंने व्यासजी को यह बात उनके उदयपुर पहुंचने तक भी नहीं बतलाई। जब वे स्टेशन पर पहुंचे तो उन्होंने अपने स्वागत में बजने वाली पुलिस बैण्डों की धुन को बंद कर दिया।

जब कलेक्टर ने उनसे प्रथम अभिवादन किया तो उन्होंने सबसे पहले यही पूछा कि सामरजी कहा हैं ? मैं तो उस समय भीड़ में दबा हुआ था। नये-नये पुलिस के अफसर उदयपुर में आये हुए थे। मुझे प्लेटफॉर्म पर जाने भी नहीं दिया।

जब बार-बार व्यासजी ने मेरे लिए पूछा तो पुलिस ने भीड़ को मेरे लिए एक तरफ करदी। व्यासजी ने किसी से मिले बिना ही मुझे गले लगा लिया। कहने लगे, बोलो कहां चलना है ? कला मण्डल की अपनी गाड़ी तो उस समय थी नहीं इसलिए दरबार से मैंने एक गाड़ी मंगवाली।

दरबार के प्राइवेट सेक्रेटरी साहब भी पधारे हुए थे। उन्होंने व्यासजी को लक्ष्मी विलास पधारने को कहा। व्यासजी मेरी तरफ देखने लगे। मैंने कहा, यह प्रबन्ध भी भारतीय लोककला मण्डल की तरफ से ही किया हुआ है। आप सहर्ष मानलें क्योंकि महाराणा साहब उस समय एक राज के व्यक्ति नहीं थे। इस नाते उन्होंने उनका आतिथ्य स्वीकार कर लिया और सरकार द्वारा उदयपुर सर्किट हाउस में किया हुआ प्रबन्ध धरा रह गया।

मैं खुद भी यह चाहता था कि वे दरबार का ही आतिथ्य स्वीकार करलें। अगर यह बात मैं उदयपुर आने से पूर्व ही उन्हें कह देता तो शायद नहीं मानते। मैंने तो अपने घर में उनका प्रबन्ध कर ही रखा था परन्तु वास्तव में वे मेरे यहां बहुत कष्ट पाते। स्टेशन पर उतरे तो प्रथम श्रेणी के डिब्बे में उनकी चप्पल कहीं गुम हो चुकी थी। उनके साथ न तो कोई नौकर था और न कोई प्राइवेट सेक्रेटरी।

एक छोटी सी अटेची लेकर वे नंगे पांव ही प्लेटफॉर्म पर उतर गये और उसी तरह कुछ से मिले, नहीं मिले, मेरे साथ चल पड़े। उनकी गाड़ी के साथ ही सारा सरकारी अमला चल पड़ा। कार में बैठे-बैठे मुझे कहने लगे, मेरी यह सबसे बड़ी परेशानी है कि मैं इनसे बचना चाहता हूं पर कहीं भी नहीं बच सकता इसलिए जयपुर में भी जब भी राजकाज के काम से ऊब जाता हूं तो कहीं अज्ञातवास में चला जाता हूं और अपना पता भी नहीं लगने देता हूं।

शाम को स्थानीय दरबार हॉल में भव्य आयोजन हुआ। चम्बल नृत्यनाटिका का प्रथम प्रदर्शन उदयपुर में हुआ। लगभग दो हजार लोगों ने उस प्रदर्शन को देखा था। स्वयं महाराणा साहब भी मौजूद थे। व्यासजी ने भाषण में मेरे और कला मण्डल के लिए उस अवसर पर जो भी कहा वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने लायक है। वह कला मण्डल का प्रारम्भिक काल था। किराये की इमारत में काम चलता था। आर्थिक संकट इतना था कि महीने-महीने वेतन चुकाना भी मुश्किल था। सरकार से कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती थी।

व्यासजी को मालूम था कि राजस्थानी लोककला के शोध-खोज विकास का यही एकमात्र संस्थान है। वे अपने प्रशासन में जहां लोगों की सर्वांगीण उन्नति का ख्याल रखते थे वहां कलाओं के विकास की भी पूरी जिम्मेदारी समझते थे।

मुझे कभी-कभी वे टेलीफोन पर पूछ लिया करते थे कि आर्थिक दृष्टि से संस्था का क्या हाल है। मैं कहता कि हाल क्या बेहाल है। मेरे पास अपना जो भी था वह तो खर्च कर चुका, अब आगे क्या होगा कह नहीं सकता। आपको अब कोई स्थाई प्रबन्ध करना चाहिये।

कभी-कभी वे हमारे दल को जयपुर बुला लेते और किसी सार्वजनिक प्रदर्शन में अपने निजी कोष में से हजार दो हजार की घोषणा भी करते परन्तु वह स्थायी इलाज नहीं था। हमने शिक्षा विभाग को जो आर्थिक अनुदान की अर्जी लिखी थी उस पर भी उस समय के शिक्षा निदेशक ने रिमार्क लिख दिया कि कला मण्डल का काम शिक्षा की सीमा में नहीं आता इसलिए कुछ नहीं किया जा सकता। व्यासजी को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने शिक्षामंत्री श्री भोलानाथजी को इस ओर उदार दृष्टिकोण अपनाने को कहा। मंत्री महोदय ने शिक्षा निदेशक की राय की परवाह नहीं करके आर्थिक अनुदान का आदेश दिया और हमें अपने खर्च के हिसाब से लगभग पांच हजार वार्षिक की मदद मिलनी शुरू हो गई। यह वर्ष 1954 का वर्ष था। उससे हमें काफी राहत मिली।

इस छोटी सी सहायता से हमारे हौंसले बढ़े। वह समय ऐसा था जब भारतवर्ष में कला मण्डल जैसे शोध संस्थान कहीं नहीं थे। हम ही अंधों में काना राजा के समान थे।

तब तक पांच-सात पुस्तकें भी राजस्थानी लोककलाओं पर हमारी प्रकाशित हो चुकी थीं। पुरातत्व विभाग के श्रीयुत पुरुषोत्तम मेनारिया उस समय हमें बड़े सहायक सिद्ध हुए। उन्होंने जयपुर में बैठकर ही हमारी मदद की। वहां का जयपुर प्रिन्टर्स हमारा अपना ही प्रेस जैसा था। उनके मालिक श्री सोहनलालजी जैन से मेरा घर जैसा नाता था।

मेनारियाजी और जयपुर प्रिन्टर्स के सहयोग से प्रकाशन की दृष्टि से काफी काम हो गया। उसी समय लोककला नामक त्रैमासिक पत्र का प्रकाशन भी शुरू कर दिया। कला मण्डल का एक छोटा सा दफ्तर मेनारियाजी की देखरेख में जयपुर में स्थापित हो गया। उन्होंने संस्था के प्रारम्भिक वर्षों में हमारी बड़ी मदद की।

उस समय प्रथमबार देश में प्रादेशिक अकादमियां भी स्थापित हुईं। केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी से मेरा काफी घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होगया। उसके अधिकांश कार्यों में कला मण्डल का बड़ा योगदान था। हमारे कुछ प्रकाशनों पर अकादमी ने कुछ अनुदान भी दिया।

उसके शोध-खोज के कार्य में हमने भी बड़ी अच्छी भूमिका निभाई। उस समय राजधानी में जितने भी सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे वे सब केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी के माध्यम से ही होते थे और उसमें भी कला मण्डल की प्रमुख भूमिका रहती थी।

राजधानी में जो भी विदेशी राजनयिक आते थे उनके प्रदर्शन के लिए हमें ही बुलाया जाता था। प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने हमारे प्रदर्शन कई बार देखे थे। उनको हमारी बड़ी चाव थी। हमारा नाम तो वे भूल जाते थे मगर उदयपुरवालों से वे हमें सम्बोधित करते थे। जब भी उन्हें हमारी चाह होती तो वे इन्दिराजी को या अकादमी की सचिव कुमारी निर्मला जोशी को कहते कि उन उदयपुरवालों को बुलाइये।

मुझे मालूम है कि जब दिल्ली में अमेरिका के राष्ट्रपति आरलसन होवर रास के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति बुल्गानिन और कुश्चोव हिन्दुस्तान आये तो उनके मनोरंजनार्थ हमें ही बुलाया गया। उसके बाद उजबेकिस्तान का लोकनृत्य दल और रूस का स्वान लेक बेलेट भारत आया तो उनके लिए भी हमें ही बुलाया गया। उसके बाद इण्डोनेशिया के प्रधानमंत्री शास्त्रमिजोजो, चीन के प्रधानमंत्री चाउएन लाऊ और राष्ट्रपति माऊ हिन्दुस्तान आये तब भी उनकी सेवा का मौका हमें ही दिया गया। इस तरह हम दिल्ली में और बाहर भी खूब चमके।

गणतंत्र दिवस समारोह पर जो लोकनृत्योत्सव दिल्ली में होते थे उनके नायक हम ही थे। यह सब जो दो-तीन वर्षों में हुआ, उससे संस्था को ख्याति अवश्य मिली परन्तु मुझे उससे संतोष नहीं था। हमारे कलादल को जो प्रतिष्ठा मिलनी थी वह पर्याप्त नहीं थी।

मेरा सपना दूसरा था। मैं चाहता था, हमारी लुप्तप्रायः सी लोककलाओं की पुनः प्रतिष्ठा हो। उसके मर्म को समझा जाय। लोककलाकार पुनः समाज में प्रतिष्ठापित हों। उनका आदर-सम्मान हो। उनका आर्थिक कष्ट दूर हो और उन्हें उच्चतर सामाजिक स्तर प्राप्त हो।

जब मैं अपनी जीवन गाथा लिख रहा हूं तब मुझे यह लग रहा है कि कला मण्डल अपने इस लक्ष्य से बहुत दूर है। जिस तरह हमारी रंगमंचीय कला का रूप निखरता रहा और उसे प्रतिष्ठा मिलती रही उस तरह हम अन्य दिशाओं में नहीं बढ़े। पुस्तकें भी कला मण्डल ने काफी प्रकाशित करदीं परन्तु 1960 तक के हमारे सभी प्रकाशन गम्भीर अध्ययन सामग्री देने में असमर्थ ही रहे।

इस ओर 1955 में हमने एक कदम आगे बढ़ाया। हमने योजनाबद्ध तरीके से आदिवासियों की कला-संस्कृति की खोज एवं सर्वेक्षण का एक महत्त्वपूर्ण कार्य हाथ में लिया। मैं और गोविन्द इस दिशा में किसी दूसरे लक्ष्य को लेकर प्रविष्ट हुए। वह था आदिम जातियों के संस्कृति के कुछ नमूनों का चित्रांकन। **-क्रमशः**

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।